2

मुसलमानों की आपसी एकता

(इस्लामी सुप्रीम लीडर, आयतुल्लाह ख़ामेनई की नज़र में)

□ज़ीज़ा फातमा सबूही[1]-मासूमा हैदर[2]

परिचय

□स मुद्द□पर बहुत काम करन□की ज़रूरत है, वह मुसलमानों क□ बीच एकता का मुद्दा है। यह मस□ला बहुत सी ग़लतफहमियों का शिकार है □सकी व□ह स□बहुत स□मुसलमान इस□समझ नहीं पात□हैं और ना इस की तरफ बढ़ पात□हैं। इसीलिए इस□और ब्यान करना ज़रूरी है।

इंक़लाब इस्लामी क□ सुप्रीम लीडर, आयतुल्लाह ख़ाम□ई, □पनी तक़रीर में कहत□है कि इसमें शक नहीं क□मुसलमानों की आपसी एकता (इत्तिहाद बैन□मुस्लिमीन) की ज़रूरत आ□ गुज़र□हुए सालों स□ बहुत ज़्यादा है और □हाँ हम पहुंचना चाहत□हैं वहाँ तक पहुंचन□क□ लिए काफ़ी रास्ता बाक़ी है।

रहबर न□□पनी ज़िंदगी पर ख़ुद लिखी हुई किताब में १९७९ में प□श आए वाक़य□को इस तरह लिखा कि सुन्नी-शिया में इत्तिहाद का मुद्दा उनक□लिए हम□शा स□□हमियत रखता था। इस्लामी इंकलाब की कामयाबी स□पहल□एक बार उन्होंन□□हल□सुन्नत क□साथ मिलकर ईद

---

1. afsuboohi@gmail.com.دانشجوی دکتری تفسیر تطبیقی بنت الهدی

2. masooma.heidar@gmail.com.کارشناسی ارشد مطالعات هند

मनाने की कोशिश की। शहर के बड़े बुज़ुर्गों से सलाह मशविरे के बाद ये तय पाया के १२ से १७ रबीउल अव्वल के बीच मिलकर ईद मनाई जाए। बाढ़ आ जाने की वजह से यह जश्न तो नहीं मनाया जा पाया, मगर इसकी तैयारी में हमारी एक दूसरे से खूब जान-पहचान बढ़ी । (आज़र शब, खूने दिली के लाल शुद)

आज की दुनिया में, इस्लामी मुल्कों में इत्तिहाद हमारी बहुत बड़ी ज़रूरत है। आज दुनिया के सियासी नक्शे को देखिए तो आपको तरह-तरह के गठबंधन दिखाई देंगे क्योंकि हर मुल्क और हर क़ौम आज अच्छी तरह जानती है के इस दुनिया में अकेले रहकर अपनी ज़रूरतों को पूरा नहीं किया जा सकता इसके लिए मिलकर काम करने की ज़रूरत है। (०५/१०/१३६८ SH, 26 दिसंबर1989)

हर क़दम उठाने वाले के लिए ज़रूरी है कि पहले वो जाने कि उसकी मंज़िल क्या है? क्यों उसको इस मंज़िल तक पहुंचना चाहिए? और इस तक पहुंचने के लिए वह क्या करे?

अपनी क़ौम के बीच किस तरह भाई-चारे का माहौल बनाएं? और इसको किस तरह अपने समाज में रिवाज दें? और एक सवाल जो कुछ लोगों की ज़बान पर, और बहुत लोगों के दिल में आता है वह ये के क्या इस इत्तिहाद तक पहुंचने का मतलब अपने दीनी अक़ीदे को बदलना या अपनी मुक़द्दस चीज़ों को भुला देना है या कुछ और ?

इस तहरीर में आयतुल्लाह ख़ामेनेई की तक़रीरों और विचारों की रौशनी में अपने सवालो के जवाब निकालने की कोशिश की गई है।

जिस तक़रीर से बात ली गई है उसकी तारीख साथ लिखी है, ईरानी और इंग्लिश, दोनों कैलेंडर के हिसाब से। इंग्लिश कैलेंडर (Gregorian calendar) इसलिए कि जिससे पढ़ने वाले को अंदाज़ा हो जाए कि रहबर ने ये बात कब कही थी। और ईरानी कैलेंडर की तारिख भी उनके लिए जिनको पूरी तक़रीर पढ़ना हो । वो दिए गए लिंक पर जाकर तारीख़ के हिसाब से पूरी तक़रीर निकाल सकते हैं।

मुख्य शब्द (की- वर्ड): एकता, इत्तिहाद बैने मुसलमीन, वहदत, इस्लामी सुप्रीम लीडर, आयतुल्लाह ख़ामेनेई

वहदत क्या है

रहबर की न□र में वहदत का मतलब य□नहीं कि□सुन्नी या शिया म□बूर हों □पन□□क़ीद□को छोड़ दें या एक दूसर□क□□क़ाएद को मानन□पर म□बूर हों या उन्हें किसी तीसरी तरफ़ बढ़न□को कहा □ा रहा हो। आयतुल्लाह ख़ामन□ई कहत□हैं: □पन□□क़ीद□का फैसला एक ज़ाति (व्यक्तिगत) फैसला है □ो हर व्यक्ति क□लिए □रूरी है की □ांच पड़ताल कर□और □पना रास्ता स्वयं/खुद □ूंढ़न□की कोशिश कर□। य□इंसान और ख़ुदा क□बीच का मामला है, इत्तिहाद की गुफ्तगू इस बात पर नहीं है। एकता और इत्तिहाद य□कहता है कि□मुसलमान चाह□सुन्नी हो या शिया, वो □ध्ययन करें और समझ□कि उनक□ दर्मियान कौन सी चीज़ें ऐसी हैं □िसम□विवाद नहीं है। सार□मुसलमान एक ख़ुदा पर ईमान रखत□हैं, सब का क़िबला एक है, पैगंबर एक हैं, नमाज़, रो□ा, ज़कात, ह□ में भी समानता पाई □ाती है । (१०/०५/१३६८ SH, 26 दिसंबर1989)

आयतुल्लाह ख़ामन□ई बार -बार इस नुक्त□पर ज़ोर द□त□हैं कि एकता हमारी सबस□बड़ी ज़रूरत है। रहबर उन लोगों क□बीच में □ो □ंतरराष्ट्रीय वहदत की कॉन्फ्रेंस क□संचालन करन□वाल□थ□, उनस□ कहा" :य□इत्तिहाद हमार□लिए लक्ष्य तक पहुंचन□का रास्ता नहीं, न ही हमार□लिए मक़सद तक पहुंचन□की तकनीक है। यह हम□शा क□लिए एक स्ट्र□□□ी है। इसलिए वो लोग □ो इस्लाम क□दुश्मनों क□साथ हैं वो इस विचारधारा स□सहमत नहीं है, य□वही लोग हैं □ो हमार□(ईरान) इंकलाब क□ मुख़ालिफ थ□। वह आ□ भी इस्लामी इंकलाब क□ मुख़ालिफ हैं और हम उनस□□लग हैं और वो हमस□नहीं हैं। " (२६/०१/१३६9 SH, 15 □प्रैल1990)

"इत्तिहाद का मतलब य□है कि□मुसलमान चाह□□िस फ़िरक़□और गिरोह स□हों, तरक़्क़ी क□लिए एक दूसर□क□साथ मिलकर क़दम उठायें एक दूसर□कि मदद करें और □पन□सरमाय□को एक दूसर□क□ खिलाफ न लगायें" (हदीसें विलायत, 4/262)

इत्तिहाद बैन□मुसलमीन का रास्ता1. दूसर□मुसलमानो को □पना दुश्मन ना समझें

एकता का पैग़ाम य□है कि मुसलमान एक दूसर□स□दुश्मनी न करें बल्कि हमारा दीन हमस□चाहता है क□सब इंसानो स□मुहब्बत और एहतर□ाम कर□कि उसन□सभी इंसानों को इज़्ज़त और तकरीम दी है। (सूरा इसरा, आयत७०)

﴿وَ لَقَدْ كَرَّمْنا بَني آدَم...﴾(سوره اسراء، آیه۷۰)

इसक□साथ क़ुरान कहता है कि सभी मोमिन आपस में भाई-भाई हैं। तो तुम □पन□दो भाईयों क□बीच सुलह करा दो और □ल्लाह स□डरो क□तुम पर भी रहम किया □ाए (सूरा हु□रात आयत: 10)

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَ اتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾ (سوره حجرات، آیه ۱۰)

तो फिर य□दीन कैस□इ□ाज़त द□सकता है क□एक मुसलमान दूसर□ मुसलमान स□दुश्मनी कर□य□दीन हमस□क□कहता है: ऐ मुसलमानों! आप दुनिया में कहीं भी हों, एक दूसर□स□नफरत ना करें। आपस में न लड़ें! □गर हम □पन□दोस्तों और दुश्मनों को पहचानें तो हमारी ि□ंदगी ऐसी ना हो □ो आ□ है। आ□ □क्सर मुसलमान ग़रीब हैं, □बकि ज्यादातर मुसलमान ख़ुदा स□डरन□वाल□और उसको मानन□वाल□हैं, मगर □पन□पैरों पर खड़□नहीं हैं। □गर हम सब साथ हों और □पनी शक्ति और ताक़त का उपयोग एक दूसर□क□ख़िलाफ़ न करें तो दुश्मन □पन□मकसद, (कि □ो मुसलमानों की छवि को दुनिया वालो क□सामन□ख़राब करना और उनको कमज़ोर करना है), तक नहीं पहुँच पाएगा।

आयतुल्लाह ख़ामन□ई कहत□हैं :दुश्मनी ना करन□का मतलब य□क□ एक दूसर□की मुक़द्दस चीज़ो का लह□ाज़ रखा □ाए। मुहब्बत दोनों तरफ स□होती है। सब की कोशिश होनी चाहिए कि य□आपसी मुहब्बत ज़्यादा हो। आपका दुश्मन ना शियों स□मुहब्बत करता है ना सुन्नियो को चाहता है बल्कि वह इस्लाम का दुश्मन है (क्योंकि इस्लाम इन्साफ और □दालत की बात करता है) (19/07/1368 SH, 11 □क्टूबर 1989)

2. वो □ क़ीदा□ जो आपस में समान हैं उन पर फोकस करें

इत्तिहाद क□लिए सबस□पहला काम □ो किया □ा सकता है वो उन मान्यताओं पर ज़ोर दिया □ाए □ो दोनों फ़िरक़ों / सम्प्रदायों में मान□ □ात□हों। इस पर बातचीत करन□का फ़ायदा य□होगा क□ फ़िरक़ा-वारीयत फैलान□ वाली बातें काम होंगी। (01/07/1370 SH, 23सितंबर1991)

क़ुरान सभी मुसलमानों स□कहता है कि □ गर किसी चीज़ में न इत्त□फ़ाक़ी हो □ाए तो उस□ □ल्लाह और उसक□रसूल कि तरफ पलटा दो □ गर तुम □ल्लाह पर और क़यामत क□दिन पर ईमान रखत□हो (सूरा निसा)

﴿إِنْ تَنازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَ الرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَ الْيَوْمِ الْآخِرِ ذلِكَ خَيْرٌ وَ أَحْسَنُ تَأْوِيلاً﴾ (سورہ نساء، آیہ۵۹)

3. □ पनी फ़िक्रों को क़रीब कर□

इत्त□हाद□मुस्लिमीन का मतलब य□है क□सब मुसलमान य□कोशिश करें कि एक दसूर□क□क़रीब हों। समझौत□क□साथ □ पनी शरी□ त को एक दूसर□मिला कर दख□, ततबीक़ करें। बहुत स□ऐस□इख़्त□लाफी फतव□हैं □ो समझन□समझान□और बातचीत स□हल किए □ा सकत□ हैं। इसी व□ह स□हम इस पर ज़ोर दत□हैं क□ "इस्लामिक सेंटर ऑफ़ इंटरफ□थ" बनाया □या□ उलमा, फ़क़ीह और मुतकल्लिम, इस्लामी फलसफी, सब मिलकर □ लग □ लग नज़रियो को एक दसूर□स□ ततबीक़ द□और □ मा कर□ताक□एक फिक्र क□साऐ म□मुसलमान □ मा हो। (२४/०७/१३६८ =16□ क्टूबर1989)

हम य□चाहत□है क□सार□इस्लामी मज़हब फिक्र और □ क़ीद□म□एक दूसर□क□क़रीब हो, कितनी ऐसी छोटी-छोटी बातें है □ो बातचीत स□ हल हो सकती है, एक दूसर□की दलील सुनकर एक नती□□पर पंहुचा □ा सकता है। इस तरह स□इत्तिहाद बह□तरीन इत्तिहाद है। (01/07/1370 SH, 23 सितंबर1991)

4. □मल म□इत्तिहाद

□ब सोचन□का तरीक़ा एक होगा तो उसका नती□ा □मल म□ इत्तिहाद है। यानी मुस्लमान एक दसूर□क□साथ मिलकर एक दूसर□की मदद कर□ना क□आपस म□□ुदाई और दो होन□का एहसास हो। हमारा दुश्मन ऐसा नहीं करन□दे□ता है और ना हम □क़ल को काम म□लात□हैं, □गर हम सोचकर क़दम उठाऐं तो य□काम मुश्किल नहीं है। हमन□ □पन□समा□ म□(इंक़लाब□इस्लामी क□बाद) य□बहुत बार दे□ा है क□ सुन्नी और शिया, दोनों भाई, साथ म□बैठ कर रा□नीति और समा□ी कामो म□इस तरह स□बात करत□है क□उसम□य□सोच भी नहीं पात□क□ किसका मज़हब क्या है। (01/07/1370 SH, 23सितंबर1991)

□गर □मल म□वहदत का कोई रास्ता है तो वह फिलिस्तीन का मुद्दा है। □ो मुसलमान फिलिस्तीन क□मुद्द□पर इस्राईल का साथ द□ रहा है, □ो हुकूमत इस्राईल को एक मुल्क की मान्यता द□रही है, वह बहुत बड़ी ग़लती करन□का गुनाह कर रहा है। य□काम इत्तिहाद□ मुस्लिमीन क□खिलाफ है।

□गर मुसलमान एक□ुद हो □ाय□तो फिलिस्तीन को आज़ादी मिल □ाएगी, □ितना फिलिस्तीन क□लिए हम ज़्यादा काम करेंग□उतना मुसलमानो म□इत्तिहाद और नज़दीकी बढ़□ी। (२/०८/१४०० SH, 24□क्टूबर२021)

5. इस्लामी कल्चर (culture) को रिवा□ दें

इस्लाम य□चाहता हैं कि लोग सिर्फ ज़बान स□मुसलमान ना हों बल्कि उनकी सोच और उनक□काम स□भी मालूम हो कि य□एक खुदा क□ मानन□ वाल□हैं। उसस□सच्च□इस्लाम की खूबियाँ और नैतिकता दिखाई द□ा हो।

﴿يا أَيُّهَا الَّذينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَ رَسُولِهِ وَ الْكِتابِ الَّذي نَزَّلَ عَلى رَسُولِه﴾ (سوره نساء، آیه ۱۳۶)

ऐ ईमान लान□वालों □ल्लाह और उसक□ रसूल पर और उस किताब पर □ो □ल्लाह न□□ पन□रसूल पर भ□ी है, सच्चा ईमान ल□ आओ (सूरा निसा आयत 136)

□ो ईमान ला चुक□हैं उनस□दुबारा कहना क□ईमान ल□आय□यानी उस का □सर उनकी ज़िंदगी में दिखाई द□इसी लिए हमारा एक एहम मक़सद इस्लामी कल्चर की बुन्याद रखना है, य□काम सुन्नी-शिया इत्तिहाद क□बग़ैर मुमकिन नहीं। इस्लामी कल्चर को एक मुल्क या एक फ़िरक़ा नहीं बना सकता इसक□लिए सबका साथ और मदद चाहिए। (०२/०८/१४०० SH, 24□क्टूबर2021)

इत्तिहाद बैन मुसलिमीन की रुकावट□

आ□ बहुत सी ऐसी रुकावट हैं क□□ो इत्तिहाद तक पहुंचन□नहीं द□तीं। इस में स□कुछ □नका ज़िक्र रहबर न□□ पनी तक़रीरों में किया है, य□हैं:

1. इस्लाम क□दुश्मनों की प्लानिंग

आ□ हम द□ख रह□हैं क□मुस्लिम मुल्को स□निकलन□वाल□पट्रोल क□ पैस□को ख़ुद मुस्लमान क□ख़िलाफ खर्च किया □ा रहा है। इसस□ लड़वान□वाली किताबें छापी □ाती हैं, कभी उर्दू में, कभी □रबी में, □िसस□शिया मज़हब को रद्द किया □ाए, य□सब शैतानी हाथ है। मुस्लमान को आपस म□लड़वाना, आग लगाना, उनकी साज़िश है। □िसका □ो □क़ीदा है वह हक़ रखता है क□□ पन□□ क़ीद□को साबित करन□क□लिए दलील लाए, □क़्ल स□साबित कर□ल□किन इल्म और □क़्ल क□साथ बात करन□का तरीक़ा □लग है, दुश्मनी करना या लड़ना □लग है।

दुश्मनी करन□स□इस्तकबारी (imperialism) ताक़तों की मदद होती है और मुसलमानो की पूरी ताक़त ख़ाना-□ंगी म□खर्च हो □ाती है। (19/07/1368 SH, 11□क्टूबर1989)

आ□ इस्तक़बारी दुनिया की ताक़तें सबस□ज़्यादा मुसलमानों को आपस म□लड़वान□पर पैसा खर्च करती हैं □िसस□वो दुनिया क□ मुसलमानों म□ दूरियाँ पैदा करें। (२४/०७/१३६८ SH,16 □क्टूबर1989)

सुप्रीम लीडर कहत□हैं:

शिया और सुन्नी कोई नया मुद्दा नहीं है, सदियों स इस्लाम म सुन्नी भी हैं और शिया भी। सुन्नी मज़हब में श'री, मोताज़ली और कई दूसर मज़हब और फ़िरक़ा है, शियो म भी छ इमामी, बारा इमामी, ख़बारी और उसूली होत हैं। य तक़सीम और लग-लग फ़िरक़ों म बट नक की व ह कभी दुश्मन की चाल है, कभी ग़लत फ़हमी, कभी हालत की व ह स और कभी ख़ुदग़र्ज़ लोगो की व ह स है। इनमें स कोई फ़िरक़ा नया नहीं है, लकिन य इत्तिहाद क खिलाफ जो काम हो रहा है, वो सब नया है। आ हम दख़त हैं वह हाथ जो इत्तिहाद क खिलाफ अमरीका की आस्तीन स बाहर आया है, वो वहाबियत है। य कोई छुपान की बात नहीं, आम लोगों को खुल क कहना चाहिए और सबको मालूम होना चाहिए क वहाबियत को इसीलिए मुसलमानो क बीच लाया गया था, क इस्लामी इत्तिहाद को नुकसान पहुचाया जा स तरह इस्राईल को भी इसीलिए बनाया गया था। ऐसी हुकूमत को मिडिल ईस्ट में मुस्लमान दशों क बीच बनाया गया ताक दुश्मन इसी इलाक़ा में बैठकर सुकून क साथ अपनी साज़िशें करता रह और वो हमश उसका साथ द। (०५/१०/१३६८ SH, २६ दिसंबर१९८९)

य ध्यान दन की बात है क तारीख म ज तन भी झगड फसाद, मज़हब क नाम पर हुए, चाह वो मुसलमानो क आपसी इख़्तलाफ़ ही क्यों न हों, उन लोगो की तरफ स कराय गए, जो हुकूमत कर रह थ। अब्बासी हुकूमत में दो मकतब क कलाम क मानन वालों म जो ख़ून-ख़राबा हुआ, उसम अब्बासी खलीफाओं का हाथ था । वह लोग मुसलमानो क फ़िरक़ों को अपन फायद क लिए एक-दूसर का दुश्मन बनात थ। (01/07/1370 SH, 23सितंबर1991)

2. नज़रयाती इख़्तलाफ़ का ग़ैर-इल्मी हो ना

मज़हब और फ़िरक़ों का इख़्तलाफ़ ब इल्मी बात-चीत स निकल कर आम तक पहुंच जाय तो बहुत खतरनाक हो जाता है। अनकार लोग एक दूसर स बात करत है, तो दलील दत है, बहस

करत□है उनक□ पास क़ुरान की आयत और रसूल की सुन्नत होती है □स□एक दूसर□क□ सामन□ रखत□हैं।

आयतुल्लाह ख़ामन□ई कहत□हैं: मगर □ब बात उन तक पहुँचती है □नक□ पास इल्म का हथियार नहीं है फिर वो □पन□□ज़बात को हथियार बना ल□त□है और कभी इसी क□ साथ दूसर□ हथियारों को काम में लात□हैं □ो ख़तरनाक हो □ाता है। (०५/१०/१३८५ SH, २६ दिसंबर२००६)

एक दूसर□क□ मज़हबी □ज़्बात को ग़ैर इल्मी तरीकों स□ छेड़ना और भड़काना ग़लत भी है और गुनाह भी है। इस□ एक उसूल की तरह □ान ल□ना चाहिए, इतनी समानताओं म□ एक-दो इख़्त□लाफ़ी मुद्द□ हैं, □तना उस पर ज़ोर दिया □ाएगा उतना मज़हबी तास्सुब और पक्षपात की आग बढ़ेगी। (23/08/1386 SH, 14नवंबर2007)

3. एक दूसर□क□ मुक़द्दसात की तौहीन

हर मज़हब का मानन□ वाला □पन□□ क़ीद□ और □पन□□ क़दार स□ मुहब्बत और एहत□राम करना है ल□किन इसका य□ मतलब हरगिज़ नहीं क□ उसको दूसर□ मज़हब क□ □ क़दार पर □न्ह□ ख़ुद नहीं मानता तौहीन की इ□ाज़त हो। (02/12/138१ SH, 21 फरवरी2003)

वो मुद्द□ □नम□ इख़्त□लाफ़ हो ज़रूरी नहीं वो हमश□ा एक दूसर□ कि मुक़ाबल□ में आए और उनको आमन□ सामन□ नहीं खड़ा करना चाहिए। (27/09/1386 SH, 18 दिसंबर2007)

रहबर की एक ताकीद य□ है कि मज़ाहिब एक दूसर□ क□ मुक्दसात की तौहीन न करें, तकफीर न करें। □ो कुफर और शिर्क की मदद करन□ क□ बराबर है और इस्लाम स□ ख़ियानत है, हराम है। (22/7/1392 SH, १४□ क्टूबर२०१३)

मुसलमानो म□ इत्तिहाद पैदा करन□ क□ लिए क्या क़दम उठाऐं?

आपसी मत□ □ोल क□ प्रोग्राम

ईरान क□ सुप्रीम लीडर य□ रास्ता बात□ है क□ "हफ्ता ए वहदत" को □ो १२ स□ १७ रबीउल □व्वल तक मिलादुन नबी क□ मौक़□ पर मनाया

□ाता है, सब लोग खासकर उलमा, बुज़ुर्ग, साहिब□हैसियत और वो लोग □नकी बात □वाम में ध्यान स□सुनी □ाती है, मिलकर □श्न मनायें और इसको इस्लाम क□ नाम पर ज़िंदा रख□। (19/07/1368 SH, 11 □क्टूबर।1988)

क़ौम को होशियार रहन□की ज़रूरत

सभी मुसलमानो को चाहिए क□वो मुल्ला और ख़तीब □ो हुकूमतों स□ुड़□है, □ो इस्तिकबार क□साथ हैं, ऐस□लोगो को इ□ाज़त ना दें क□ हर मुद्द□पर बात करें और इख़्त□लाफ़ की चिंगारी □लायें और भाइयो म□झगड़ा फैलायें।(19/07/1368 SH, 11 □क्टूबर1988)

हमार□पड़ोसी मुल्क भी समझें क□ दुश्मन कौन है? दुश्मनी की साज़िशें क्या हैं? कौन हमार□□ंदर झगड़ा पैदा करना चाहता है और इस इख़्त□लाफ़ का सबस□ज़्यादा नुक़सान किसको मिल रहा है? सबन□ दख□ा क□इराक़ म□□ मरीका और बर्तानिया को बुलान□का नती□ा क्या हुआ। कितन□मुल्क ज़लील हुए और □ भी तक हो रह□हैं। इन सब मुश्किलों का इला□ हमारा आपसी इत्तिहाद है। (२४/०६/१३७१ SH, 15 सितंबर1992)

रसूल□खुदा(स) की शख़्सियत स□ुड़□रहना

रसूल□खुदा(स) की □ज़ीम शख़्सियत, मुसलमानों में वहदत की सबस□बड़ी व□ह होनी चाहिए। हर ज़मान□म□मुसलमानो का रसूल□ खुदा(स) (स) पर ईमान, एहत□ाम और □ज़्बात क□साथ रहा है। सभी मुसलमान हुज़ूर(स) स□इश्क़ करत□हैं। यही यक□हती की व□ह और सब क□□मा होन□का मरकज़ है □ो मुसलमानो क□दिलो को एकदूसर□ स□क़रीब करता है। तारीख़ की किताबों न□□ो रसूल□□ करम(स) क□ बार□म□लिखा वो बहुत कम है, □स्ल में हुज़ूर की शख़्सियत इसस□ बहुत बुलंद थी। मगर □ो सही किताबों न□लिखा वो इतना कम भी नहीं क□ हमार□किरदार को बुलंदी न द□सक□। रसूल की पैरवी इंसानियत को बुलंदियों तक पहुँचती है और सभी मुसलमानों को इस्लामी वहदत पर इकट्ठा करती है। मुसलमानों को चाहिए क□□ पन□

पैग़म्बर(स) की शख़्सियत को पहचानें, उनकी ज़िन्दगी, □ख़लाक़, सीरत, उनकी सिखाई हुई बातों पर तहक़ीक़ करें।

कुछ सदियों स□मग़रिब मुल्कों न□रसूल□□ करम(स) की शख़्सियत क□ख़िलाफ बड़ी साज़िशें की। वो हुकूमतें □न्होंन□इस्लाम को ख़त्म करन□की ठान रखी है वो समझ चुक□हैं क□इस्लाम स□मुक़ाबल□का रास्ता पैग़म्बर(स) की शख़्सियत को निशाना बनाना है। उन्होंन□इसक□ लिए बहुत स□काम किय□और आ□ भी □लग-□लग रास्तों स□इसी कोशिश में लग□हैं कि हुज़ूर की □च्छाइयों पर पर्दा डाल सकें। क्योंकि वो लोग □ानत□हैं कि आ□ भी दुनिया में बहुत स□ऐस□हक़ पसंद लोग हैं □नको पैग़म्बर क□बार□म□इतना भी पता चल □ाय□ □तना क□ एक आम मुसलमान □ानता है (मतलब पैग़म्बर क□ चमकत□किरदार की कुछ किरणें भी उन तक पहुंच □ाएँ) तो उनका □क़ीदा और झुकाव इस्लाम और रूहानियत की तरफ मज़बूत हो □ाएगा।

सुप्रीम लीडर कहत□हैं: इसस□पहल□क□ इस्लाम क□ दुश्मन □पन□ हथकंडो स□रसूल क□बार□में ग़लत सोच को लोगो क□दिमाग म□डाल□ हमें चाहिए क□ इसक□ लिए क़दम उठाऐं। यही आ□ इस्लाम की ज़रूरत है समझदार और हुनरमंद मुसलमानों को चाहिए क□वो सही रास्तो स□इल्मी, सक़ाफती और cultural, artistic काम कर□ हमन□ दख़ा क□□ब ईरान क□इस्लामी इंक़लाब क□बाद दुनिया म□रूहानियत की तरफ झुकाव बढ़ा और इस्तक़बार की ताकत□ंग और सियासत क□मैदान म□हार गईं तो उन्होंन□पैसों क□ज़ोर पर □पन□एज□ंटो स□रसूल की तौहीन करवाई और वो शैतानी किताब लिखवाई। □लबत्ता उस वक़त मुसलमानों न□एक□ुट होकर □वाब दिया और हमार□रहबर इमाम खुमैनी न□उसक□क़त्ल का हुक्म द□दिया। (२४/७/१३६८ SH, 16 □क्टूबर।1989)

पुरान□इख़्तलाफ़ स□दुरी

आयतुल्लाह ख़ामन□ई नसीहत करत□हैं इत्तिहाद तक पहुंचन□क□

लिए ज़रूरी है क□ हम खुद को उस माज़ी (गुज़र□ ज़माना) स□ □लग करें □समें झगड□ और इख़्तलाफ़ की बातें थीं। □क्सर तारीख बहस, झगड़ा, झुटलाना, खून-खराबा और ग़लत बर्ताव को लिखती है। □गर इस माज़ी को याद करेंग□ तो एक फ़िरक़ा "□हक़ाकुल हक़" लाएगा तो दूसरा "तोहफा इसना□शरी" को दिखाएग□। दोनों फ़िरक़ों न□ □पनी दलीलों स□ भरी किताबें भी लिखी हैं और इंकार और रद्द म□ भी काफी लिखा है। माज़ी गुज़र गया, (□ल्लाह रहमत कर□ गुज़र□ हुए लोगो पर)। हमें ऐस□ माज़ी स□ आ□ सरोकार नहीं है, पहल□ □ो हुआ उसका □ं□ाम और उसक□ नुकसान भी हमार□ सामन□ हैं। आ□ हम□ □पनी ज़िम्मदारी को पूरा करना है, हम य□ मानत□ हैं क□ खुदा हम□ देख रहा है, हम□ तौहीद को पहचनवाना है, भाई-चारगी को बढ़ाना है और उसक□ लिए झगड़ा और इख़्तलाफ़ वाल□ माज़ी को छोड़ना होगा। (०५/१०/१३६८ SH, २६ दिसंबर १९८९)

□हलबैत इत्तिहाद का मरकज़ हैं

□ब आयतुल्लाह बुरु□र्दी न□ वहदत और तक़रीब□ मज़ाहिब क□ लिए काम शुरू किया तो वो हदीस ए सक़लैन को बयान करत□ थ□ □ो मुख़्तलिफ इस्लामी मज़हबो म□ मानी □ाती है और सभी फ़िरक़ों की बड़ी किताबों में लिखी हुई है। इसमें रसूल(स) न□ कहा है क □पन□ बाद दो बड़ी चीज़ें छोड़ रह□ हैं □ो खुदा की भ□ी किताब यानी क़ुरान है और उनक□ घर वाल□ "□हलबैत"।

आयतुल्लाह ख़ामनेई कहत□ हैं: □हलबैत□ रसूल(स) को सार□ मुसलमान क़बूल करत□ है और उनक□ लिए इज़्ज़त और एहतराम को मानत□ है। सभी फ़िरक़ों म□ पैग़म्बर(स) क□ □हलबैत स□ मुहब्बत ज़रूरी है। इसस□ किसी मुस्लमान को इंकार नही। हर फ़िरक़□ का मानन□ वाला □पन□ दीनी □क़ीद□ क□ साथ □हलबैत को मरकज़ क़रार द□□ (०७/०१/७० SH, २७ मार्च १९९१)

क़ुरआन□ करीम इत्तिहाद का मरकज़ है

□ब पूरी उम्मत□ इसलामी क़ुरआन□ करीम को आसमानी किताब

और खुदा का पैग़ाम मानती है तो इसस□□च्छा एक नुक्त□पर □मा होन□□मा होन□का रास्ता और क्या हो सकता है? सब इस रूहानी दस्तरख्वान पर □मा हों और सब साथ म□इस खुदा की दी हुई इज़्ज़त और क़ुदरत स□फ़ायदा उठायें। (१४/०४/१३९० SH, ०५□ुलाई२०११)

इत्तिहाद क□पीछ□साज़िशें

भारतीय उप महाद्वीप में कुछ लोग □ो □पन□आपको मुसलमानों क□लिए लीडर बतात□हैं, वो कहत□हैं. क□हम न सुन्नी हैं और न शिया □स□क□डॉ ज़ाकिर नाइक □पन□एक वीडियो में कहत□हैं क□सुन्नी-शिया क़ुरान म□नहीं है, सुन्नी-शिया का मुद्दा सियासत की व□ह स□ शुरू हुआ और क़ुरान कहता है क□सियासत की व□ह स□□गर कोई फ़िरक़ावरीयत करता है तो रसूल(स) का उसस□ल□ना द□ना नहीं। बस □ल्लाह-रसूल(स) को मानना चाहिए। क़ुरान में बस मुसलमान का ज़िक्र है।

aQ۰vSVYjh۳۰https://youtu.be/))

आयतुल्लाह ख़ाम□ई वहदत को इस निगाह स□द□खना, सही नहीं समझत□ वो कहत□है "कुछ लोग ग़लती स□कहत□हैं क□इस्लाम क□ शुरु क□दिनों म□सुन्नी-शिया नहीं था, इसलिए सुन्नी-शिया करना ग़लत है। य□बात सही नहीं क्यों क□तारीख न□लिखा है कि रसूल(स) की वफ़ात क□बाद, मुसलमानो में इख़्त□लाफ़ हुआ, और ख़िलाफत में लोग दो गिरोह म□बंट गए, इलाही एहकाम को समझन□क□तरीक□□लग हो गए। कोई □गर य□कह□क□न सुन्नी होना चाहिए और न शिया तो इसका मतलब य□है क□हर गिरोह □पन□सार□मा'आरिफ, फ़िक़्ह और □पन□कल्चर को छोड़ द□ दूसरी मुश्किल य□खड़ी होगी क□हर वो चीज़ □ो इस्लाम क□शुरुआती दौर म□नहीं थी उस□छोड़ना पड़□गा तो य□बात □क़्ल क□ खिलाफ है और खुद एक साज़िश है"। (१९/०७/१३६८ SH, ११/□क्टूबर१९८९)

इत्तिहाद और शिद्दतपसंद □मा□त

इस्लामी दुनिया म□ इत्तिहाद बहुत ज़रूरी है मगर इसका य□ मतलब नहीं क□ किसी क□ हर ग़लत □क़ीद□ और ग़लत तर्ज़े □मल को नज़र□ंदाज़ कर दिया □ाए। एक बहुत बड़ा फितना □िसम□ मुसलमान आ□ गिरफ्तार हैं वो मुद्दा तकफ़ीरी □मा□त का है (शिद्दतपसंदी), □ो □पन□□लावा सभी मुसलमानो को इस्लाम स□ बाहर कहत□ हैं। उनका रवैया इत्तिहाद क□ खिलाफ भी है और उनस□ मुत्तहिद हुआ भी नहीं □ा सकता।

आयतुल्लाह ख़ाम□ई कहत□ हैं, तकफ़ीरियों का □क़ीदा एक वबा की तरह खतरनाक है। □गर वबा का मुक़ाबला नहीं किया □ाय□ तो ता□ी स□ फ□ल सकती है। □गर मुस्लमान शिद्दतपसंदी की मुखालिफत नहीं करें और उलमा, सियासी लोग इसक□ मुक़ाबल□ क□ लिए न खड़□ हों तो य□ बला और आग□ बढ़□गी और एक आग की तरह इस्लामी समा□ को झुलसा क□ रख द□गी, इसलिए इसको रोकन□ की ज़रूरत है। चाह□ दीनी फतव□ स□ □ल□क और रोशन फिक्र (intellectuals) लोगों को चाहिए क□ □पन□ क़लम स□ इसका मुक़ाबला करें। (16/02/1392 SH, 6 मई2013)

तकफ़ीरी ताक़तों का खतरा सिर्फ य□ नहीं क□ वह लोग ब□गुनाहो का क़त्ल करत□ है, य□ बड़ा □ुर्म है मगर इसस□ बड़ा खतरा य□ है क□ वो सुन्नी-शिया को एक-दूसर□ स□ बदगुमान करत□ हैं। इस ख़तर□ को □भी स□ रोकना चाहिए ऐसा न हो क□ शिया लोग उनक□ बर्ताव को द□ख कर य□ सोचें क□ हम स□ ऐसा बरताव किया □ाता है तो हमें भी सब □हल□ सुन्नत स□ मुक़ाबला करना चाहिए और ऐसा भी न हो क□ □हल□ सुन्नत शिद्दतपसन्द लोगों की बातों में आऐं और □ो तोहमत शियो पर लगात□ हैं वो मानन□ लगें। (१५/१२/१३९२ SH, 6मार्च२०१४)

नती□ा

□िस वक्त मुसलमान, इस्लामी मुल्कों में □रब और इराक स□ ल□कर ईरान और प□ावर तक रात और दिन सुन्नी-शिया क□ मुदद□ पर बहस और मुनाज़िर□ में लग□ थ□, उसी वक्त उनका दुश्मन उनक□ मुल्कों

को टुकड़□टुकड़□करन□क□ख्वाब द□ख रहा था। कितन□□फसोस की बात है क□दुश्मन न□□पन□ख्वाबों को हक़ीक़त में बदल लिया। और आ□ उम्मत ए मुस्लिमा □पनी पुरानी महानता और बुज़ुर्गी को याद कर रही है □ो आसानी स□दोबारा हासिल नहीं होन□वाली।

आ□ □ब हम इस्लामी द□शों को द□खत□हैं तो Imperialism & Colonialism का □सर न□र आता है। उन्होंन□द□शों को इस तरह बाँटा कि हम□शा क□लिए क़ौम, ज़बान, म□हब क□इख़्त□लाफ और झगड़ा बाकी रह□। ल□बनान, इराक, तुरकी, पाकिस्तान, ईरान, □फ्रीकी द□श, सब इस में फंस□हुए हैं।

य□सब किसलिए? सिर्फ इसलिए क□इन द□शों की □मीनें कीमती एन□र्जी स□भरी हैं। तो क्या मुसलमान □पना बचाव नहीं कर सकता? ज़रूर कर सकता है। हमार□पास □पना हक़ ल□न□क□लिए बड़ी आबादी, ब□शुमार दौलत, रूहानी सरमाया है। हमारी सक़ाफ़त और तारीख बहुत पुरानी है। ल□किन फिर बचाव क्यों नहीं करत□? क्योंकि हमारी सारी ताक़त और एन□र्जी खुद स□लड़न□में ख़त्म हो □ाती है। क्योंकि हमार□बीच ऐका नहीं। और हम समझत□नहीं कि हमें नित नए बहानों स□□लग किया □ाता है। (18 /02/1383 SH, ७मई२००४)

इसस□मुक़ाबिल□क□लिए वहदत्त और तक़रीब की तरफ पलटना ही ज़रूरी रास्ता हैं।

इत्तिहाद की आ□ सारी दुनिया को □रूरत है। उसस□कहीं ज्यादा इस्लामी द□शों को इसकी ज़रूरत है। यह आए दिन मिलन□वाली खबरों स□पता चलता है। हर कुछ दिन पर दिल दहला द□न□वाल□हादस□की खबरें मिलती है। किसी शिया स्कूल, इमामबाड़ा या मस्जिद पर हमला होता है। □गर सुन्नी शिया दोनों मिलकर ऐस□दहशतगर्दी क□हमलों क□सामन□खड़□हों, उस वक्त दहशतगर्द इतनी आसानी स□मुसलमानों की □ान पर हमला नहीं कर सकत□।

इसी हकीक़त को मद्द□न□र रखत□हुए सुप्रीम लीडर न□इस साल की आलमी वहदत कांफ्रेंस में कहा:

मुसलमानों में इत्तिहाद बढ़ान□क□ लिए ज़रूरी है कि प्लानिंग की □ाए। लोगों को इसक□ फायद□ बतात□ हुए उनकी हिम्मत बढ़ाई □ाए और □िम्मदारियां बांटी □ाए। एक दूसर□ की नमाज़ में आए। □हल□ सुन्नत भाइयों को शिया सेंटर्स में □ान□ को उत्साहित करें। (२/०८/१४०० SH, २४ □क्टूबर२०२१)

आयतुल्लाह ख़ामनई, इत्तिहाद तक पहुंचन□क□ लिए सुन्नी शिया दोनों क□ आलिम और □वाम को बराबर की दावत द□त□ हैं। वो कहत□ हैं य□ सार□ मुसलमानों की □िम्मदारी है कि हर उस आवाज़ क□ खिलाफ़ बोलें □ो इत्तिहाद को तोड़न□क□ लिए उठती है। आ□ इसकी □रूरत को समझत□ हुए हर एक को य□ □िम्मदारी उठाना पड़□गी। चाह□ सुन्नी हो या चाह□ शिया । (29/10/92 SH, 19□नवरी2014)

सारांश

आपसी इत्तिहाद एक बहुत बड़ी ज़रूरत है □िसक□ बग़ैर क़ौम तरक़्क़ी नहीं कर सकती। य□ इस्तक□बार की पुरानी चाल है क□ □िसक□ चलत□ उन्होंन□ सालों दूसर□ द□शों पर हुकूमत की है "लड़वाओ और हुकूमत करो" (divide and rule) आ□ पहल□ की तरह की हुकूमतें तो बाक़ी नहीं मगर व□स्ट की पॉलिसी पूर्वी द□शो (third world) क□ लिए आ□ भी वही है। खास कर मुसलमानों क□ खिलाफ। इस बार□ में सुप्रीम लीडर रोशन □ल्फा□ में ऐलान करत□ हैं :वो लोग □ो सुन्नी को शिया क□ खिलाफ़ और शिया को सुननी क□ खिलाफ़ भड़कात□ हैं वो न □हल□ सुन्नत क□ दोस्त है और न शिया क□, वो इस्लाम क□ दुश्मन हैं। (6/12/1381 SH, 25फरवरी 2003)हर इख्तिलाफ़ और □ुदाई की बात करन□ वालों को आप दुश्मन का ए□ेंट कहिए। शायद उस□ खुद □पनी गलती का पता न हो, कभी फ़साद करन□ वालों को □पन□ फ़साद क□ बार□ में पता नहीं होता। क़ुरान की सूरा क□ह□□क आयत इस तरह कहती है: “ऐ पैग़म्बर क्या हम आपको उन लोगों क□ बार□ में बताएं □ो □पन□ कामों में नुकसान उठान□ वाल□ है। वह लोग □िनकी कोशिश दुन्या की ज़िंदगी में बर्बाद हो गई और वह य□ समझ□ हुए है

कि □च्छ□काम कर रहा है।"

﴿قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمالاً الَّذينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَياةِ الدُّنْيا وَ هُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعاً﴾ (سوره کهف، آیه ۱۰۳ ـ ۱۰۴)

वो सोचत□हैं हम सही काम कर रह□हैं □बकि वो फ़साद फैला रह□ होत□हैं। वो लोग □ो □पनी ब□बुनियाद बातों स□या ग़लत कामों स□ इख़्तिलाफ़ डालें उन को उनकी गलती बताइए। या वो □पनी □हालत की व□ह स□दुश्मन का साथ द□रहा है। या □ो □ान बूझकर दुश्मन का साथ द□रहा है उसस□दूरी की□ए। (१३/४/1368 SH, ४ □ुलाई१९८९)

आ□ हर आवाज़ □ो वहदत की तरफ़ बुला रही है, वो खुदाई आवा□ है। और हर आवा□, हर ज़बान □ो इस्लाम क□मज़हबों को एक दूसर□की दुश्मनी की तरफ बुलाती है वो शैतान की तरफ स□ बोल रहा है। आ□ □ब वहदत की □रूरत हर वक़्त स□ज़्यादा है, □ो मुसलमानों को इतिहाद स□दूर करता है, वो शैतान क□लिए, शैतान क□ फायद□में काम कर रहा है। (१८/३/1392 SH, ८ □ून२०१३)

समान □क़ीदों पर ताकिद करें। □सकी □सली □िम्म□दारी बा□सर लोगों क□साथ है। मौलाना- मोलवी लोगों को चाहिए क□मज़हबी इख़्तिलाफ़ स□सब को बचाएं। सुन्नी शिया एक दूसर□को भाई की निगाह स□द□खें, न दुश्मन और न □□नबी। सार□विवाद इसीलिए फैलाए □ा रह□हैं क□मुसलमान फिलस्तीन को भूल □ाएं। झगड़□ख़ाना □ंगी, तशदूद पसंदी को फैलाया इसलिए □ाता है क□लोग □पन□ ज़रूरी मुद्द□ स□ ग़ाफिल हो □ाएं। (२९/10/1392 SH, १९ □नवरी२०१४)

वहदत का एक □हम पहलू यह है कि "फिकरों "को क़रीब किया □ाए □ो पढ़□लिखों और विचारकों का काम है। □रूरी है कि □मल और रफ्तार में मुसलमान एक □गह □मा हो। एक काम करें, एक हदफ़ और एक पक्ष की तरफ चल□□ो आज़ादी फ़िलिस्तीन और

क़ुदस□शरीफ है। य□काम सार□मुसलमानों का है, आलिम और □वाम, स्कॉलर और तालिब□इल्म, सब को फिलस्तीन को बचान□क□ लिए हमक़दम होना होगा कि यह क़दम ही खुद वहदत की दिखाती है। □मली वहदत का दूसरा मैदान इस्लामी कल्चर की ई□ाद है □सकों बनान□क□ लिए न एक मुल्क काफी है और न एक फिरक़ा ।

मुसलमान □पन□गैर-विवादास्पद आपसी मुद्दों की ख़ातिर इकट्ठा हो। खुदा को एक मानना (वैहदानीयत) और क़ुरआन□करीम, क़िबला , क़्यामत पर ईमान, य□सब हमें एक □गह पर लाती है। रसूल खुदा(स) की □ज़ीम शख्सियत हमार□दिलों में एक दूसर□की मुहब्बत डालन□क□ लिए काफी है। यह हमार□ईमान और हमारी वहदत क□ □सली स्तंभ। है। □ब सूतून पर हमला होता है तो फिर सारी कोशिश उस को बचान□क□ लिए की □ाती है। आ□ □ब बर्रे सगीर में रसूलल्लाह की पवित्रता (क□दासत) पर उंगली उठाई □ा रही है तो □स्ल में मुसलमानों क□ □हम तरीन उसूल और सुतून पर हमला हो रहा है। □ब य□सोचन□की क्या म□ाल कि □सन□तौहीन की वो सुन्नी था या शिया □बकि वह मुसलमान भी नहीं। क़ुरान तो सभी आसमानी किताब पर यक़ीन रखन□वालों स□कहता है कि:

"एक हो □ाओ उस कलम□की ख़ातिर □ो हमार□और तुम्हार□बीच समान है, वो य□कि □ल्लाह क□ □ लावा किसी और की इबादत नहीं करेंग□किसी को उसका शरीक नहीं बनायंग□और उसक□सिवा किसी को □पना रब भी नहीं बनाएंग□(सूरा आल□इमरान, आयत 64)

﴿قُلْ يا أَهْلَ الْكِتابِ تَعالَوْا إِلى كَلِمَةٍ سَواءٍ بَيْنَنا وَ بَيْنَكُمْ أَلاَّ نَعْبُدَ إِلاَّ اللَّهَ وَ لا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئاً وَ لا يَتَّخِذَ بَعْضُنا بَعْضاً أَرْباباً مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ﴾ (آل عمران، آیه ۶۴)

यही क़ुरान न□तमाम इंसानों स□चाहा क□ मिल कर रहें। आ□ आयतुल्लाह ख़ामन□ई □पनी पूरी कोशिश कर रह□हैं कि मुसलमानों में आपसी झगड़□ख़त्म हो □ाएँ।

इस्लाम स□दुश्मनी की एक बड़ी व□ह यह भी है कि इसलाम

□पन□मानन□वालों को रूहानी और मानवी बातों कि तरफ बुलाता है। यह समानता और □क़्ल का मज़हब है। और दुनिया की पस्त फ़िक्रों स□नि□ात द□ता है □िस की तलाश में आ□ सारी दुनिया ब□क़रार है।

मगर दुनिया को □पना खुदा मानन□वाल□य□पसन्द नहीं करत□और इस तरह मुसलमानों को आपस में लड़वा कर इसलाम मज़हब को सब क□सामन□खराब करना चाहत□हैं। □िसस□कि लोग इस मज़हब कि □च्छाइयों को न □ानें

□लग-□लग दौर क□बुजुर्ग, मुसलमान रहबर □पन-□पन□तरीक□स□इस □हम् मस'□ल□की ज़रूरत को बयान करत□रह□हैं । इस□ □ल्लामा इक़बाल न□□पन□श□र में इस तरह कहा:

"मनफ□त एक है, इस क़ौम की, नुकसान भी एक
एक ही सब का नबी, दीन भी, कुरान भी एक
हरम ए पाक भी, □ल्लाह भी, कुरान भी एक
कुछ बड़ी बात थी, होत□□ो मुसलमान भी एक
फ़िरक़ा बंदी है कहीं और कहीं ज़ातें हैं
क्या ज़मान□में पनपन□की यही बातें हैं।"

"□िस दिन ख़ुद मुसलमानो की आँख खुल□ी उस दिन य□ख्वाब ताबीर को पहुंच□ा"

इंशा □ल्लाह

संदर्भ

1. क़ुरान करीम

2. □ □रशब, मोहम्मद □ ली, खून□□गर क□लाल शुद , इन्क़िलाब□ इस्लामी पब्लिक□शन, १३९८

3. सय्यद □ ली ख़ामन□ई, हदीस□विलायत , इन्क़ि, लाब□इस्लामी पब्लिक□शन, 1398

4. Dr Zakir Naik What's the difference between Shia and Sunni,

https://www.youtube.com/watch?v=30vSVYjh0aQ

5. साइट khamenei.ir

۱. بیانات در دیدار میهمانان کنفرانس وحدت اسلامی و جمعی از مسئولان نظام 2/8/1400

https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۴۸۸۹۱

۲. بیانات دردیدارجوانان ودانشجویان سیستان وبلوچستان 6/12/1381

https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۸۷۹۸

۳. بیانات دردیدارمسئولان نظام ومیهمانان کنفرانس وحدت اسلامی 29/10/1392

https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۵۰۵۶

۴. پیام به کنگره عظیم حج 22/7/1392

https://farsi.khamenei.ir/message-content?id=۲۴۲۰۳

۵. بیانات دردیدارشرکت کنندگان درمسابقات بین‌المللی قرآن کریم 18/3/1392

https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۲۸۲۸

۶. بیانات دردیداراقشارمختلف مردم 13/4/1368

https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۱۲۵

۷. بیانات دردیدارجوانان ودانشجویان سیستان وبلوچستان 6/12/1381

https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۸۷۹۸

۸. بیانات در دیدار میهمانان کنفرانس وحدت اسلامی و جمعی از مسئولان نظام 2/8/1400
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۴۸۸۹۱
۹. بیانات در دیدار کارگزاران نظام 18/2/1383
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۳۲۳۰
۱۰. بیانات در دیدار اعضای مجلس خبرگان رهبری 15/12/1392
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۵۶۹۶
۱۱. بیانات در دیدار دست اندرکاران برگزاری انتخابات 16/2/1392
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۲۴۹۴
۱۲. بیانات در دیدار اقشار مختلف مردم 19/7/1368
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۲۰۱
۱۳. بیانات در دیدار شرکت کنندگان در مسابقات قرآن 14/4/1390
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۱۲۸۶۶
۱۴. بیانات در دیدار اعضای شورای عالی مجمع تقریب مذاهب اسلامی 1/7/1370
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۴۹۲
۱۵. بیانات در دیدار جمعی از علمای اهل سنّت 5/10/1368
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۲۳۷
۱۶. بیانات در دیدار اقشار مختلف مردم 24/7/1368
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۲۰۴
۱۷. بیانات در دیدار کارگزاران نظام 24/6/1371
https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=۲۶۳۶
۱۸. پیام به کنگره عظیم حج 27/9/1386
https://farsi.khamenei.ir/message-content?id=۲۷۷
۱۹. بیانات در دیدار مردم زاهدان 2/12/1381

۳۱۶۶https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=

۲۰. بیانات در دیدار کارگزاران حج 23/8/1386

۳۴۱۰https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=

۲۱. بیانات در دیدار شرکت کنندگان در هم اندیشی علماي اهل تسنن و تشیع 5/10/1385

۳۳۷۵https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=

۲۲. بیانات در دیدار با اعضای ستاد برگزاری کنفرانس جهانی اهلبیت 26/1/1369

۲۲۹۴https://farsi.khamenei.ir/speech-content?id=

۲۳. بیانیه گام دوم

https://farsi.khamenei.ir/message-content?id=41673

فصل دوم

مقالات به زبان آذری